यात्रा का पहला कदम ...

सत्य जिसे जानना हो, उसकी पहली शर्त, उसकी पहली भूमिका क्या है? सत्य की यात्रा पर पहला कदम - अपने प्रति सत्य होना है। आप जिसे जानने निकले हो, उसे आप 'उस जैसा' होकर ही जान सकोगे। और अगर आप अपने प्रति ही असत्य हो- आप अपने होने के प्रति ही झूठे हो- आपके भीतर ही अप्रमाणिकता है-तो सत्य से आपका संबंध कैसे तय होगा? कैसे निर्धारित होगा?

सत्य को खोजने बहुत लोग जाते हैं, लेकिन प्रमाणिक होने की चेष्टा बहुत कम लोग करते हैं। जो सत्य को खोजने जाते हैं, वे कभी न पा सकेंगे, लेकिन जो 'सत्य होने' की चेष्टा करते हैं, वे सदा पा लेते हैं।

- ब्र.कु.गंगाधर

सत्य को खोजने कहीं जाना नहीं है;स्वयं को असत्य होने से बचाना ही उसकी खोज है। कोई सत्य कहीं छिपा नहीं है -पहाड़ों में, कंदराओं में : आप असत्य हो, इसलिए आपको दिखाई नहीं पड़ रहा है। असत्य की आंखें सत्य को देख भी कैसे सकती हैं! आप सत्य होते ही उसे जान लोगे। रोम-रोम को वही स्पर्श कर रहा है। श्वांस-श्वांस में उसी की धुन है। सब ओर उसी ने आपको घेरा है। लेकिन आप असत्य की एक रेखा बनाकर उसके भीतर खड़े हो। आपने असत्य से अपने को ढांक लिया है। सत्य तो अनढका है; आप ढके हुए हो। सत्य को खोलने की भी कोई जरूरत नहीं है; आप बंद हो। इस फासले को, इस फर्क को-ठीक से समझ लो।

सत्य के साथ कुछ भी नहीं करना है। जो कुछ भी करना है, वह आपको अपने साथ ही करना है। और सबसे पहली जरूरत है कि आप अपने संबंध में जो भी सत्य है, उसे स्वीकार करने में समर्थ हो जाओ।

आप बेईमान हो और ईमानदारी की खोज करोगे! कैसे यह होगा? बेईमान आदमी कैसे ईमानदारी की खोज करेगा? उसकी खोज में भी बेईमानी होगी; वह खोज में भी धोखा देगा।

एक आदमी ने आठ महीने तक किराया नहीं चुकाया- किसी मकान का, जिसमें वह रह रहा था। आखिर मकान मालिक परेशान हो गया। और एक दिन सुबह आकर उसने कहा,'अब बहुत हो गया। अगर किराया नहीं चुका सकते हो, तो अब तुम मकान छोड़ दो।' उस आदमी ने कहा, क्या आठ महीने का किराया बिना दिये चला जाऊं! यह नहीं होगा। चाहे आठ साल चुकाने में क्यों न लग जायें, लेकिन किराया चुकाकर ही जाऊंगा। तुमने मुझे समझा ही क्या है?

ऊपर से तो दिखता है, यह आदमी बड़ी प्रमाणिकता की बात कर रहा है, लेकिन भीतर गहरे में वह आठ साल मुफ्त रहने का इंतज़ाम कर रहा है। यह आठ साल बाद कहेगा कि 'अस्सी साल भले लग जाये लेकिन बिना किराया चुकाये क्या मैं जा सकता हूँ। आपने मुझे समझा क्या है? वह भी भलीभांति जानता है। लेकिन यह जो प्रमाणिक होने की चेष्टा कर रहा है, उस चेष्टा में भी इसकी अप्रमाणिकता तो छिपी ही रहेगी। अप्रमाणिक आदमी कुछ भी करे, उसमें अप्रमाण होगा। वह सच भी तभी बोलेगा, जब सच का उपयोग झूठ की तरह हो सकता हो, जब सच से भी वह आपको नुकसान पहुंचा सकता हो। और आपको याद है: आप बहुत बार सच बोलते हो, लेकिन वह आप तभी बोलते हो, जब सच से भी आप दूसरों की हानि कर सको।

हिंसक आदमी सत्य का उपयोग भी हथियार की तरह करता है। यह स्वभाविक है। क्योंकि अगर आपका व्यक्तित्व हिंसक है, तो आप अहिंसा भी साधोगे, तो उसमें हिंसा प्रवेश कर जायेगी। साधेगा कौन? क्रोधी आदमी अगर अक्रोध साधेगा, तो उसकी अक्रोध की साधना में भी क्रोध का ही बल होगा।

पहली बात ठीक से समझ लेनी जरूरी है कि बेईमान को ईमानदार बनने की सीधी कोई सुविधा नहीं है। पहले तो बेईमान को अपनी बेईमानी स्वीकार करनी होगी। उस स्वीकार में ही आधी बेईमानी तिरोहित हो जाती है, उसका बल खो जाता है।

बेईमान सदा इन्कार करता है कि 'मैं और बेईमान'! क्या समझा है आपने मुझे?' इस इन्कार में ही बेईमानी की ताकत छिपी है। यह इन्कार ही बेईमान का गढ़ है। और वह आपसे इन्कार नहीं करता, वह अपने से भी इन्कार करता है कि 'मैं और बेईमान? कभी-कभी जरूरत पड़ जाती है, बात और है। ऐसे मैं आदमी ईमानदार हूँ।' बेईमान का भी मन राजी नहीं होता-यह स्वीकार करने को कि 'मैं बेईमान हूं।' मानता तो वह भी नहीं अपने को ईमानदार है। ऐसे कभी-कभी परिस्थिति या संयोग के कारण बेईमान हो जाता है।

क्रोधी आदमी भी यह नहीं समझता है कि मैं क्रोधी हूं। वह भी समझता है कि कभी-कभी अवसर ऐसे आ जाते हैं कि क्रोध करना पड़ता है। क्रोधी मैं हूं नहीं। और जो आदमी समझता है : 'मैं क्रोधी नहीं

- शेष पेज 4 पर...

हमारे हर कर्म सुखदायी हों

हर एक का वन्डरफुल पार्ट है, जिसको यह खुशी व नशा है वह हाथ उठाओ। संगमयुग में स्वयं भगवान ने याद दिलाया कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। बाबा कहे मैं तेरा तू मेरी...और कोई मेरा नहीं है। शक्ति देने वाला तो शक्ति दे रहा है, पर लेने वाले को अक्ल चाहिए। सर्वशक्तिवान बाबा ऐसी शक्ति दे रहा है, हम साक्षी हो करके बाबा को साथी बना लें। शक्ति बहुत देता है, मांगने से नहीं देता है, बाबा मुझे शक्ति दे दो ना...मैं ठीक नहीं हूँ ना, तो नहीं देता है। बाबा मैं क्या करूँ, यह फलाना ऐसा है...क्या करूँ, यह कहेंगे तो नहीं देता है यानि यह स्मृति रहे कि सर्वशक्तिवान मेरा बाबा है, वो दे रहा है, हमें कभी कोई भी बात में थकने की आदत होगी तो नहीं ले सकेंगे। शक्ति इतनी है, थकावट क्या होती है वो पता नहीं पड़ता है क्योंकि सर्वशक्तिवान की शक्ति है। बाबा कहता है, चल रही हो तो चला रहा हूँ और अगर मैं कहूँ कैसे चलूँ...तो क्या कहेगा? तो कभी संकल्प नहीं आयेगा मैं क्या करूँ, कैसे करूँ...यह शब्द मुख से निकलेगा तो चेहरा कैसा होगा!

मुझे दीदी की विशेषताएं याद आ रही हैं जिनका नाम पहले गोपी था, अव्यक्त नाम मनमोहिनी था। तो साकार बाबा के मन को भी मोह लिया, तो बाबा ने भी कहा दीदी। दीदी मीठी थी तो शक्ति रूपा भी थी इसलिए कई भाई-बहनें दीदी से डरते भी थे, पर मैं नहीं डरती थी क्योंकि दीदी ने ही मुझे प्वाइंट्स दे करके क्लास कराना सिखाया, तो मैंने बड़ों के संग से सीखा है, देखा है, पाया है, वही मैं आपको बताती हूँ और मुझे मिसाल बनाने के लिए ही बाबा ने आत्मा को इस शरीर में यहाँ रखा है। तो मैं भी आपको कहती हूँ और कुछ पुरूषार्थ नहीं करो, एक मिसाल बनो। आपका नाम लेते ही कोई को बाबा और उनकी बातें याद आ जाए। बाबा की एक-एक बात याद आने से और उसकी प्रैक्टिस करने से बड़ा मजा आता है। जैसे बाबा कहते, हे आत्मा देही अभिमानी भव! देह यहां मैं वहां विदेही, देह के भान का एकदम नाम-निशान न रहे, विदेही बनने से परमात्मा का प्यार खींच सकेंगे। ऐसे बच्चों को बाबा देखता है और कहता है बच्चा सयाना है।

तो ऐसा कुछ कर्म न करूँ जो दु:ख भोगना पड़े, सच में भोगना पड़ता है, इसलिए ज़रा भी कोई बात में यह क्या हुआ, मैं क्या करूँ...थोड़ा भी सोच चला तो उसका दु:ख अन्दर में भी होगा तो चेहरे पर, मुख पर भी आयेगा। देहअभिमान में आ करके न दु:ख लेना, न देना। ऐसे कौन हैं जो दु:ख न देते हैं, न लेते हैं? सच्चा-सच्चा हाथ उठाओ। लेंगे तो देंगे भी, भूल से भी दु:ख लिया तो ऑटोमेटिक मेरे से भी औरों को दु:ख ही मिलेगा इसलिए दु:ख न लेना न देना। जब ऐसी स्थिति बने तब दुआ देंगे और सबकी दुआ मिलेगी। मैं करता हूँ, नहीं, अकर्ता, अशरीरी स्थिति में न्यारा, बाबा का प्यारा बनकर हर पल, प्रभु-मिलन का फायदा लो। भगवान के महावाक्य अन्दर ही अन्दर ऐसे दिल में हों जो बस सदा ही दिल खुश, औरों को भी खुशी बांटो क्योंकि अगर खुश नहीं रहेंगे, खुशी नहीं बाटेंगे तो वो क्या लाइफ है? खुश रहके ज्ञान के साथ खुशी बांटने से खुशी बढ़ती है। सार यह है कि खुश रहना, खुशी बांटना। प्राप्तियों से सम्पन्न का स्वरूप ही है हर्षितमुख।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

साधना के बिना साधन का उपयोग निरर्थक

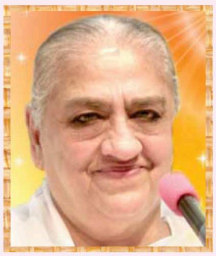

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

चाहे हम बोलते हैं, चाहे हम कर्मणा करते हैं लेकिन पहले तो संकल्प ही चलता है ना। जैसा संकल्प चलता है वैसे मुख से बोल भी निकलते हैं। जैसी वृत्ति, दृष्टि होती है वैसे ही कर्म होते हैं इसलिए बाबा कहते हैं कि संकल्प-शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है और अन्त में यह संकल्प शक्ति ही हमारे काम आयेगी। यह साधन तो न थे, न रहेंगे। जबसे स्थापना हुई है तब से ही यह सब साधन निकले हैं। यह सब साधन सेवा के लिए हैं, आगे बढ़ने के लिए निकले हैं लेकिन यह सदा थोड़े ही रहेंगे। तो अन्त में भी हमको संकल्प शक्ति ही काम में आयेगी। टचिंग होनी चाहिए ना, यह टेलीफोन, फैक्स, यह कम्प्युटर, ईमेल आदि क्या-क्या निकला है, यह सब साधन सन्देश पहुँचाने के लिए निकले हैं। परन्तु साधना के बिना यह सब साधन बेकार हैं। साधन हम यूज करते हैं लेकिन साधन के वश होना और साधन को निमित्त कार्य अर्थ यूज करना, फिर न्यारे हो जाना, वश नहीं होना, इसलिए बाबा ने आजकल संकल्प शक्ति पर बहुत अटेन्शन दिलाया है। संकल्प शक्ति हमारे कन्ट्रोल में होनी चाहिए। अंत में यह मन्सा संकल्प ही पास विद ऑनर बनने में मदद करेंगे।

अगर संकल्प शक्ति कभी यहाँ, कभी वहाँ फालतू नाचती रहती है तो मन्सा सेवा कैसे कर सकेंगे! हमारा पहले एक चित्र बना था जिसमें दिखाया था वृक्ष के नीचे एक योगी बैठा है, योग लगा रहा है और वृक्ष के ऊपर बन्दर बैठे हैं वह इधर से उधर, उधर से इधर जम्प दे रहे हैं। तो उस चित्र में दिखाया था - मन भी ऐसे बन्दर के समान एक डाली से दूसरी डाली, दूसरी से तीसरी डाली पर घूमता रहता है, जम्प लगाता है। तो संकल्प शक्ति एक सेकण्ड में कहां तक पहुँच सकती है, यह तो सबको अनुभव है, वैसे आप कहाँ नहीं भी पहुँच सको लेकिन संकल्प से तो पहुँच ही सकते हो। तो बाबा ने हम सबको यही अटेन्शन दिलवाया कि संकल्प-शक्ति पर अटेन्शन रखो। संकल्प-शक्ति सभी के पास है, लेकिन अगर शुभ तरफ उपयोग करते हैं तो वह जमा होती है और व्यर्थ में करते हैं, तो न अच्छा न बुरा और बुरे संकल्प करते हैं तो शक्ति गंवाते हैं। संकल्प एक शक्ति है। जैसे धन शक्ति है। धन अगर अच्छी तरह से किसको यूज़ करना आता है तो मौज मनाता है और धन अगर ऐसे ही बैंक में पड़ा है, और वह ऐसे ही मर जाता है तो व्यर्थ गया। और गंवाया तो नुकसान होता है, ऐसे ही यह संकल्प शक्ति सबसे बड़ा खजाना है इससे हम जो चाहें अपना भविष्य बना सकते हैं, जमा कर सकते हैं। और संकल्प शक्ति के ऊपर अगर आपका कन्ट्रोल है तो समझो सब शक्तियों के ऊपर कन्ट्रोल है।

तो मूल आधार संकल्प है। बाबा कहते हैं इसको जमा करो। स्थूल धन को जमा करने की कितनी कोशिश करते हैं। स्थूल धन को बचाने का हमको ध्यान रहता है लेकिन वह भी संकल्प अगर मेरा ठीक है तो कमा सकते हैं। अगर संकल्प शक्ति हमारी नीचे-ऊपर है तो कमाई भी नहीं कर सकते हैं। कोई लखपति और कोई कखपति बन जाता है, कारण क्या होता है? संकल्प शक्ति कमजोर होने के कारण निर्णय शक्ति नहीं, और निर्णय शक्ति न होने के कारण हाँ के बजाए ना किया तो गया। इसीलिए बाबा रोज़ कहता है अपना चार्ट जरूर देखो। लेकिन सारा दिन अपनी मस्ती में मस्त होंगे, तो फिर टाइम नहीं मिलता है। फिर तो चेकिंग ही नहीं होती। तो रात को सोचेंगे क्या! सोचेंगे भी तो समझ नहीं सकेंगे कि मैंने किया ही क्या लेकिन हमारी पुरूषार्थी लाइफ है तो इतना अटेन्शन रहता है ना। समझ में तो आता है कि हम राँग कर रहे हैं, अगर हम अपनी चेकिंग इतनी भी नहीं करते हैं तो बाकि पुरूषार्थी किस चीज़ के! तो अपने को चेक करना, यही तो हमारी जीवन है।

सतयुग में तो प्रालब्ध भोगेंगे। कमाई का समय, जमा करने का समय तो अभी है। यदि अभी हम जमा नहीं करेंगे तो कब करेंगे! इसलिए बाबा कहता है संकल्प शक्ति के ऊपर बहुत अटेन्शन रखो और आप सिर्फ एक घण्टा ही चेक करो तो मालूम पड़ेगा कि फालतू समय और संकल्प कितना जाता है, जिसमें हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। इसीलिए बाबा कहता है कि अपने संकल्प शक्ति के ऊपर अटेन्शन रखो और जमा करो। हाँ, काम में लगाओ या जमा करो। अन्त समय में जब हमारा पेपर होगा उस समय बाबा मदद नहीं करेगा! उस समय तो देखेगा कि बच्चों ने क्या-क्या मेहनत की है और मेहनत का फल ले रहे हैं। उसके लिए पुरूषार्थ तो हमको अभी करना है।